जामिया मिल्लिया इस्लामिया
जनसंपर्क एवं मीडिया समन्वयक कार्यालय

27 जुलाई 2020

प्रेस विज्ञप्ति

मैंग्रोव इकोसिस्टम पर जामिया ने ऑनलाइन एक्सटेंशन लेक्चर का आयोजन किया

जामिया मिल्लिया इस्लामिया की फैकल्टी आफ आर्किटेक्चर एंड एकॉस्टिक ने 27 जुलाई 2020 को, श्री लक्ष्मीकांत देशपांडे द्वारा मैंग्रोव इकोसिस्टम विषय पर ऑनलाइन एक्सटेंशन लेक्चर का आयोजन किया।

श्री देशपांडे गोदरेज एंड बॉयस एमएफजी कंपनी लिमिटेड के साथ मैंग्रोव संरक्षण और पर्यावरण स्थिरता प र, वरिष्ठ प्रबंधक के रूप में काम करते हैं। मैंग्रोव, जैव विविधता, जल और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर उन्हों ने महत्वपूर्ण शोध करने के साथ, इनके संरक्षण के लिए जागरूकता अभियान चलाए हैं।

वह महाराष्ट्र वन विभाग, सह्याद्री निसर्ग मित्र, जीआईजेड, सीईआरई और अन्य संगठनों के लिए सलाहकार के तौर पर कार्यरत हैं। उनकी खास रुचि जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता संरक्षण, आद्ररभूमि और मुंबई के मैंग्रोव क्षेत्र को बचाने पर है। वह इस कार्य को अपनी सामाजिक जिम्मेदारी की तरह निभा रहे हैं।

उन्हें फील्ड स्टडीज काउंसिल फॉर एनवायरनमेंट एजुकेशन, यूके द्वारा जैव विविधता निगरानी और शिक्षा पर 'डार्विन छात्रवृत्ति' मिली, जिसे उन्होंने सफलतापूर्वक पूरा किया।

उनके लेक्चर के लिए 300 से अधिक छात्रों ने अपना पंजीकरण कराया। इनमें वास्तुकला, शहरी उत्थान, राजनीति विज्ञान, भूगोल आदि के विभागों के छात्र भी शामिल हैं।

जामिया की आर्किटेक्चर एंड एकॉस्टिक फैकल्टी की डीन, प्रोफ़ेसर हिना ज़िया ने अपने स्वागत नोट में दे श भर में विविध नाजुक पारिस्थितिक तंत्रों के संरक्षण के महत्व पर ज़ोर दिया ।

प्रो ज़िया ने श्री देशपांडे को अपनी फैकल्टी में आमंत्रित किया, ताकि विश्वविद्यालय श्री देशपांडे के मैंग्रोव पा रिस्थितिक तंत्रों के लिए किए गए व्यापक शोध कार्यों से लाभ उठा सके।

सत्र का संचालन, जामिया के आर्किटेक्चर विभाग के सहायक प्रोफेसर, इक्केदार आलम ने किया।

व्याख्यान में मैंग्रोव और उसी के साथ जुड़ी तमाम प्रणालियों की विस्तृत चर्चा से हुई। श्री देशपांडे ने मैंग्रोव पर्यावरण की विशेषताओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। साथ ही, हमारे शहरों और अन्य क्षेत्रों में वनस्पतियों और जीवों, दोनों की जैव विविधता के लिए, इस तरह के पारिस्थितिक तंत्र के महत्व पर विस्तार से चर्चा की गई।

श्री देशपांडे ने मैंग्रोव से जुड़े पारिस्थितिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और यहां तक कि धार्मिक मू ल्यों के बारे में बताया।

मैंग्रोव इकोसिस्टम को उत्पन्न खतरों के परिप्रेक्ष्य में, उसके संरक्षण के लिए सरकार और स्थानीय हितधार कों की भूमिका पर भी चर्चा हुई। व्याख्यान इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि वनों, झीलों, नदियों और वन्यजीवों स हित प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा और उनका सुधार करना और प्राणियों के प्रति दया भाव रखना भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि ऐसा करना भारतीय संविधान की धारा 51(ंए) में उल्लि खित हमारा मौलिक कर्तव्य भी है।

अहमद अज़ीम
जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया समन्वयक